नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

प्रयागराज 27 दिसंबर, 2019

प्रेस विज्ञप्ति

हिंदी विश्वविद्यालय में कवियों का संगम

आज दिनांक 27 दिसंबर 2019 को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र प्रयागराज में

22 वें स्थापना दिवस समारोह के उपलक्ष्य में चल रहे कार्यक्रमों के अंतर्गत आज काव्य–गोष्ठी का आयोजन रखा गया जिसमें शहर के तमाम कवियों ने अपनी कविताओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। काव्य संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में जहां हिन्दुस्तानी एकेडेमी के अध्यक्ष डॉ. उदय प्रताप जी ने अपनी कविता सुनाई वहीं कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वाराणसी के कविश्रेष्ठ श्री हरिराम द्विवेदी 'हरी भैया' ने अपनी कविताओं से समां बांधा। कविता पाठ करने वाले मुख्य कवियों में प्रयागराज के शैलेश गौतम जी ने कविता पाठ करते हुए कहा-लिखा किया रह जाएगा रहता नीर शरीर, इसलिए मरते नहीं, तुलसी कबीर। बात मेरी कर रहा होगा, नाम लेने से डर रहा होगा, जिंदगी बेबशी कहाई खबर, आज वह कुदर रहा होगा। इस सिलसिले में श्री जितेन्द्र कुमार पांडेय ने कहा कि इंसानियत आजकल कैसी हो गई है, क्या लिखूं कितनी दफा लिखूं वासना में डूबी नजर लिखूं इसके बाद डॉ. अमरजीत राम ने कहा कि ऐ

शाम जरा ठहर कर लेने दे मुटठी भर रेत अपने हथेलियों में। श्री हितेष सिंह ने कहा-मैं एक एक सीढ़ी से क्रमानुसार

चढ़ना चाहता हूं, जब भी मुझे याद आता है, बरगद का पेड़ मेरे आंखों के सामने। इसके आगे श्री निखिल पाठक,

विवेक पांडेय, डॉ. विवेक निराला, श्री संक्षेप वर्णपाल, डॉ. निलिमा मिश्रा ने कहा कि युगों युगोंसेबह रही गंगा निर्मल

धार, तीर्थराज प्रयाग की महिमा अपरंपार। इसके आगे डॉ. विजयानंद जी ने अपनी कविता पढ़ी और उसके बाद डॉ

मुरार जी त्रिपाठी ने अपनी कविता सुनाई। इसके बाद विश्वविद्यालय के शोध छात्र कृष्ण मोहन ने अपनी लघु कविता सुनाई। इसी क्रम में डॉ. लोकेश शुक्ला ने-गोरी गोरी नाजुक बिटिया के कंगना, भोलीभाली अंखियों में भोलीभाली सपना। डॉ. क्षमाशंकर पांडेय ने-रोटियां महंगी हुई है मौत के हथियार सस्ते, सूचना संजाल फैला सृजन सिमटा हुआ है। केंद्र के अकादमिक निदेशक प्रो. अखिलेश दुबे ने मुनिया शीर्षक से एक पहाड़ी बच्ची का अपनी कविता में दर्द बयां किया। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. उदय प्रताप सिंह ने कहा- संत अगर संसार में नहीं होता तो यह संसार जल जाता। गोरी अपने देश में पनपा ऐसा रोग, भोर भई बलटा लिए गए शहर की ओर। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि भविष्य में हिन्दुस्तानी एकेडेमी तथा हिंदी विश्वविद्यालय इस तरह के आयोजनों को संयुक्त रूप से करेगा और विश्वविद्यालय को हिन्दुस्तानी एकेडेमी का सभागार मुफ्त में उपलब्ध कराया जाएगा। अंत में काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे श्री हरिराम द्विवेदी 'हरि भैया' ने कहा कि हिंदू या मुसलमान होना जरूरी नहीं है, जरूरी है तो इंसान होना। उन्होंने कविता पाठ करते हुए कहा कि बादल गरजे बिजली चमके गिरे पानी, पानी लिखे जिंदगानी की कहानी मितवा। झरना गजरी गावे,पानी लिखे जिंदगानी की कहानी मितवा।

मंच का संचालन डॉ. ऋचा द्विवेदी ने कियासाथ ही अतिथियों का परिचय डॉ. अनूप कुमार तथा डॉ. सुशील कुमार पांडेय ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अनुराधा पांडेयने किया। कार्यक्रम में शहर के अनेक गणमान्य उपस्थित लोगों में रानी रेवती देवी इंटर कालेज के प्रधानाचार्य श्री बांके बिहारी जी, श्रीमती शैल तनया जी, कल्पना सहाय जी, रामभजन जी, राजेश मिश्र जी, मानव संसाधन मंत्रालय के सलाहकार श्री आशुतोष जी अनेकों लेखक, कवि, आलोचक तथा विश्वविद्यालय के शोधार्थी, विद्यार्थी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

(विनोद रमेशचन्द्र वैद्य)
सहायक कुलसचिव